निर्णायकः जो सुसमाचार की माँग है

सुसमाचार निर्णायक रूप से देने की माँग करता है

डॉ. डेविड प्लैट

आधार ...

हम "निर्णायकः जो सुसमाचार की माँग है" श्रंखला के आधे भाग में पहुँच चुके हैं। हम यीशु मसीह के चौंकाने वाले शब्दों को देख रहे हैं, यीशु के कठिन शब्दों को, यीशु के जीवन बदल देने वाले, चुनौती देने वाले शब्दों को देख रहे हैं। मैं आपके सामने कुछ बातों को रखना चाहता हूँ जिन्हें याद रखना हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है, विशेषतः जब हम इस श्रंखला के अन्तिम भाग की ओर बढ़ते हैं, और जब हम इस बारे में और अधिक बात करते हैं कि सुसमाचार हमारी संपत्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है।

शैतान नहीं चाहता है कि हम उचित बातों पर ध्यान दें। मेरा विश्वास है कि वह हमारे ध्यान को गलत बातों की ओर मोड़ना चाहेगा और हमारे ध्यान को भटकाना चाहेगा और हमें परीक्षा में डालना चाहेगा। अतः मैं चाहता हूँ कि हम इन रीतियों से उससे सावधान रहें। ये चार हैं, मैं आपके लिए प्रार्थना करता रहा हूँ और अपने स्वयं के जीवन में इनसे जूझता रहा हूँ। ये कुछ बातें हैं जिनसे मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ।

हम तुलना नहीं करते...

पहलाः हम तुलना नहीं करते क्योंकि यीशु का जीवन हमारा प्रमाप है। इससे मेरा मतलब यह है। मेरा विश्वास है कि इस श्रंखला में, और इन सत्यों को लागू करने में एक–दूसरे को अस्वस्थ रीति से देखने की खतरनाक प्रवृत्ति है।

सी.एस. लुईस बताते हैं कि कैसे घमण्ड का तुलना से घनिष्ट संबंध है। हम निरन्तर दूसरों से अपनी तुलना करते हैं, और यदि हम दूसरों से बेहतर कर रहे हैं तो हमें अपने बारे में अच्छा महसूस होता है। यदि हम दूसरों से बुरा कर रहे हैं तो हम अपने बारे में बुरा लगता है। और हम निरन्तर यह देखने का प्रयास करते हैं कि दूसरों की तुलना में हम कहाँ पर हैं।

यह कुछ ऐसा है जिससे चेले परिचित थे। आप यूहन्ना 21 में जाएँ, पतरस की मृत्यु के बारे में कुछ कठोर बातें कहते हैं कि उसकी मृत्यु कैसे होगी। और पहला काम जो पतरस करता है, वह मुड़कर यूहन्ना को वहाँ खड़े देखता है, और वह पूछता है, "इसका क्या होगा?" वह तुरन्त तुलना करने लगता है, और यीशु उसे देखकर कहते हैं, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक जीवित रहे, तो तुझे क्या, पतरस?" और यीशु ये शब्द कहते हैं, "मेरे पीछे हो ले।" मेरे पीछे हो ले। अपनी नजरें मुझ पर लगा। मुझ पर ध्यान लगा और मेरे पीछे हो ले।

इसलिए जब हम इस श्रंखला में से चलते हैं तो हमारे लिए यह सोचना गलत होगा कि, "मेरी आशा है कि दूसरा व्यक्ति जिसके पास बहुत सारा धन है वह इन बातों को सुने। उनकी तुलना में मैं अच्छा कर रहा हूँ।" या "मैं इस परिवार से या इस व्यक्ति से अधिक दे रहा हूँ। मैं अधिक कर रहा हूँ।" और निरन्तर, हम तुलना करते रहते हैं। हमें ऐसे मार्ग पर नहीं चलना है। यीशु हमारा प्रमाप है।

अब, मैं यहाँ पर सावधान रहना चाहता हूँ, क्योंकि ऐसे स्वस्थ तरीके हैं जिनके द्वारा हम एक–दूसरें में मसीह के जीवन को देख सकते हैं। इसी कारण मैं जीवन चरित्रों को पढ़ता हूँ। इसी कारण मुझे अपने जीवन में जीवन चरित्रों को पढ़ने की आवश्यकता है क्योंकि मुझे ऐसे लोगों को देखने की आवश्यकता है जिन्होंने अपना सब कुछ दे दिया, खोए हुओं तथा कंगालों के लिए अपना जीवन दे दिया। और मैं इस प्रकार की कहानियों को पढ़कर सोचता हूँ कि जीने का एक और तरीका है, और वे मुझे ऊँचे धरातल की ओर बुलाते हैं, अस्वस्थ रीति में नहीं, परन्तु इस तरह कि मैं उनमें मसीह के जीवन को देखता हूँ और मैं मसीह की ओर प्रेरित होता हूँ। और यह एक अच्छी बात है जो हम एक–दूसरे के लिए कर सकते हैं।

हमें इस प्रकार एक–दूसरे की आवश्यकता है। मुझे यह देखने की आवश्यकता है कि मसीह का जीवन आप में कैसे दिखाई देता है और आपको मेरे जीवन में इसे देखने की आवश्यकता है। अतः हमें एक–दूसरे को मसीह में प्रेरित करने की आवश्यकता है। परमेश्वर हमारी सहायता करे। हमें नाममात्र की मसीहियत के उदाहरणों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है जो बहुतायत में हैं। हमें ऐसे भाइयों और बहनों को देखने की आवश्यकता है जो मसीह का जीवन जी रहे हैं और इन वचनों को निर्णायक रूप से मान रहे हैं, और इस प्रकार हमें एक–दूसरे को मसीही की ओर प्रेरित करना है, और इस प्रक्रिया में हमें अस्वस्थ तुलना से सावधान रहना है जो मसीह के पीछे चलने से हमारे ध्यान को भटका देती है। इसलिए हम तुलना नहीं करते हैं। यीशु का जीवन हमारा प्रमाप है।

हम निराश नहीं होते...

दूसरा, हम निराश नहीं होते, क्योंकि यीशु की उपस्थिति हमारी आशा है। जब हम यीशु को यह कहते हुए देखते हैं, "यदि तुम अपने पिता या अपनी माता या अपने भाई या अपनी बहन को अप्रिय न जानो, या यदि तुम मृत्यु और यातना के औजार, क्रूस को उठाकर मेरे पीछे न चलो, यदि तुम अपना सब कुछ त्याग न दो तो तुम मेरे चेले नहीं हो सकते।" इस प्रकार के वचनों को सुनने के बाद यह सोचने की प्रवृत्ति है कि, "मुझे बहुत दूर जाना है। मैं शुरूआत कहाँ से करूँ? मुझे नहीं लगता कि मैं कभी अच्छा बन पाऊँगा।" ऐसे शब्द मन में आने लगते हैं, और यहीं पर मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि इस प्रकार की निराशा मसीह की ओर से नहीं आती है। यह विरोधी की ओर से आती है, क्योंकि मसीह ने तुम्हें कभी अच्छा बनने के लिए नहीं बुलाया है। उसने कहा, "केवल मैं ही तुम्हें अच्छा बना सकता हूँ," उसने हम में से किसी को इसलिए नहीं बुलाया है कि हम इन वचनों को सुनकर उन्हें अपने बल पर अभ्यास में लाने का प्रयत्न करें। हमारी आशा के रूप में उसकी उपस्थिति की यही खूबसूरती है। वह हमारे अन्दर रहता है। वह आपके अन्दर रहता है। वह आपके अन्दर रहता है और वह यह नहीं कहता, "अपने पिता और अपनी माता, भाई और बहन को अप्रिय जानो। यातना का औजार उठाओ और सब कुछ छोड़कर मेरे पीछे हो लो," और फिर देखो कि तुम्हारे शहर यह कैसा दिखाई देता है।

इसके विपरीत वह कहता है, "यह मेरा वचन है, और मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि यह कार्यरूप में कैसे दिखाई देता है। मैं तुम्हारे विचारों को बदल दूँगा। मैं तुम्हारी लालसाओं को बदल दूँगा। और मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ इस प्रकार रूपान्तरित कर दूँगा कि तुम इसे व्यवहार में लाने में सक्षम हो जाओगे। इसलिए मुझ पर भरोसा रखो।"

भाइयो और बहनो, उस पर भरोसा रखो। मसीह पर भरोसा रखो। वह भला है। उसके पास जाओ। उससे प्रार्थना करो। लम्बी प्रार्थना करो। एक साथ प्रार्थना करो। अकेले प्रार्थना करो। उसकी खोज करो और उससे कहो कि वह इन सत्यों को आपके जीवन में लाए, और वह इसमें भला है। इस प्रकार की प्रार्थना से वह सम्मानित होता है। निराश न हों। यीशु की उपस्थिति हमारी आशा है।
हम यीशु के सामने शाबासी पाने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। हम कहीं पहुँचने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। हम यथार्थ का अनुभव कर रहे हैं, हमारे अन्दर मसीह की उपस्थिति अधिक से अधिक हो, और वह निराशा की यात्रा नहीं है। यह आशा की यात्रा है। इसलिए निराश न हों। यीशु की उपस्थिति हमारी आशा है।

हम उदासीनता से बचते हैं...

तीसरा, हम उदासीनता से बचते हैं, क्योंकि यीशु के वचन हमारा अधिकार हैं। उदासीनता एक संभावित प्रतिक्रिया है, और मुझे डर है कि यह एक सामान्य प्रतिक्रिया है जब हम सुसमाचारों में इस प्रकार के वचनों को देखते हैं। हम इन वचनों के प्रति उदासीन होने की परीक्षा में पड़ जाते हैं।

आप में से कुछ लोग सोच रहे होंगे, तुम इन सत्यों से जूझने के बारे में बात कर रहे हो, और वास्तविकता यह है कि बहुत से लोग इन सत्यों से नहीं जूझ रहे हैं, शायद किशोर, जो सोच रहे हैं, "मेरे जीवन में इन सबका क्या मतलब है?" या वयस्क, वे नाममात्र की मसीहियत के साँचे में ढ़ले हुए हैं, कलीसिया में जाना, सन्देश सुनना, दिनचर्या को पूरा करना और उसके तुरन्त बाद अपने जीवन में व्यस्त हो जाना। और हमें किसी भी कीमत पर इनसे बचना है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप यीशु के वचनों के प्रति उदासीन या लापरवाह होने से बचें। मैं यह अनुरोध इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि यदि आप मसीह के अनुयायी हैं तो यह कोई विकल्प नहीं है। यदि आप मसीह के अनुयायी हैं तो मसीह के वचनों के प्रति उदासीन होना कोई विकल्प नहीं है। हम में से कुछ लोग मसीही बन गए हैं, और हमसे केवल इतना कहा गया था कि हमें केवल प्रार्थना करनी है और हम अपना जीवन चाहे कैसे भी बिताएँ हम स्वर्ग जायेंगे, और मसीही होने का यही अर्थ है।

और यदि इस भ्रम में होकर आप मसीही बने हैं, तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि बाइबल के अनुसार आप मसीही नहीं हैं। आप मसीह में आए ही नहीं हैं। मसीह के अनुयायी होने का अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है। मसीह के अनुयायी बनने का अर्थ है परमेश्वर के विरूद्ध अपने पापमय विद्रोह के प्रति जागरूक होना, और परमेश्वर के अनुग्रह से परमेश्वर का विरोध करने से फिरना और अपने जीवन के प्रभु और सर्वोच्च राजा के रूप में उस पर भरोसा करना। और यदि ऐसा है, तो यीशु के वचन ही आपके जीवन को निर्धारित करते हैं।

मैं इसे एक बार फिर दोहराता हूँ। जो यीशु कहते हैं वही आपके जीवन को निर्धारित करता है। इसलिए, मसीह का चेला होना और यीशु के वचनों के प्रति उदासीन होना संभव नहीं है, क्योंकि वह जो कुछ कहता है उसी से आपके जीने का तरीका निर्धारित होता है।

इसलिए मैं आपसे उदासीन न होने का अनुरोध करता हूँ। उसके वचन हमारा अधिकार हैं। यह आज के हमारे सुनने के तरीके को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है क्योंकि वचन को सुनकर हम यह नहीं कहते

हैं कि चलो आओ हम यीशु के वचनों को सुनते हैं और देखते हैं कि उनको मानने से क्या होगा। हम यह कहते हैं, जब हम इस पुस्तक को खोलते हैं तो हम कहते हैं, यीशु जो कुछ कहते हैं हम उसे मानेंगे। उसके वचनों में ऐसा अधिकार है।

हम अकर्मण्यता से बचते हैं...

अन्ततः, हम अकर्मण्यता से बचते हैं, अकर्मण्य होना। क्यों? क्योंकि यीशु की महिमा हमारा लक्ष्य है। उदासीनता यीशु के वचनों की अवहेलना है। अकर्मण्यता यीशु के वचनों को लागू करने में आलस करना है।

और मैं यहाँ सावधान रहना चाहता हूँ क्योंकि मेरा विश्वास है कि यह मसीह के सर्वाधिक समर्पित अनुयायी के लिए भी एक खतरनाक परीक्षा है। मैं ईमानदारी से कहना चाहता हूँ कि मैं भी इससे जूझता हूँ। मेरा विचार है कि जब हम इस श्रंखला में इस प्रकार के वचनों का देखते हैं तो एक खतरनाक परीक्षा है कि हम अपने जीवनों को देखते हैं, हमारे आस–पास की संस्कृति को देखते हैं, और सोचते हैं, "मैं इन वचनों से नहीं निपटना चाहता। इसके अतिरिक्त, इन वचनों से व्यवहार करके मैं एक अच्छा जीवन नहीं बिता सकता, एक अच्छा पासबान नहीं बन सकता, और एक अच्छी कलीसिया का हिस्सा नहीं बन सकता।"

और हमें अपना सब कुछ देने की जरूरत नहीं है, यह देखने की जरूरत नहीं है कि कैसे हमारे जीवन और हमारी संपत्ति खोए हुओं और कंगालों के लिए खर्च की जानी चाहिए। हमें इन सारी बातों के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है, और अचानक हम सोचने लगते हैं कि यह युद्ध लड़ने लायक नहीं है। और मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ; यह युद्ध लड़ने लायक है।

यह भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, और विशेषज्ञता, और विधिवाद के विरूद्ध भी लड़ने लायक है। यह उस आत्म–केन्द्रित संस्कृति के विरूद्ध भी लड़ने लायक है जो न केवल हमें घेरे हुए है बल्कि हमें खा रही है। यह पाखण्डी, नाममात्र की, बाइबल विरोधी मसीहियत के विरूद्ध लड़ने लायक है। यह लड़ने लायक है, संघर्ष के लायक है, कुश्ती करने के लायक है। ये सारे शब्द नये नियम के परिचित शब्द हैं।

नया नियम कहीं भी ऐसी तस्वीर नहीं देता है कि आप एक पहाड़ी से उतर रहे हैं और हवा आपके बालों को छूकर निकल रही है और यह एक आसान यात्रा है। नहीं, आप इस प्रकार के शब्दों को देखते हैं, हम एक लड़ाई में हैं, दौड़ में हैं और एक युद्ध में हैं, और यहाँ यही तस्वीर है, इन सत्यों के साथ कुश्ती करना,

हमारी प्रवृत्तियों से और इस संसार की बुद्धि से लड़ना जिसके कारण हमने परमेश्वर के वचन को पूरी तरह अनदेखा कर दिया है।

हमें इस युद्ध को लड़ना है, और यह लड़ने के लायक है क्योंकि यीशु की महिमा इसके लायक है। वह हमारा लक्ष्य है। हम उसकी महिमा चाहते हैं। हम उसकी महिमा को अनुभव करना चाहते हैं। न केवल हम उसकी महिमा को अनुभव करना चाहते हैं, बल्कि हम चाहते हैं कि खोए हुए और कंगाल भी उसकी महिमा को अनुभव करें।

और इस श्रंखला की समाप्ति पर यह समाप्त होने वाला नहीं है। आज से एक वर्ष के बाद यह समाप्त होने वाला नहीं है। यह तब तक के लिए एक निरन्तर युद्ध होगा जब तक कि हम मसीह को न देख लें, और यही इसकी खूबसूरती है क्योंकि इस युद्ध में हमारी विजय सुनिश्चित है।

इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूँ, आपको उत्साहित करना चाहता हूँ, इन बातों से जूझें, इन से निपटें और देखें कि इसका आप जीवन में क्या असर होगा। आइए हम एक साथ मिलकर इस युद्ध को लड़ें। हम यीशु के चेले हैं हमें तब तक चलना है जब तक वह न आए, आखरी बूँद तक देना है, सबके सुनने तक प्रचार करना है, और उसके रोकने तक कार्य करना है। और जब वह अपनों के लिए आएगा तो हमें पहचानने में उसे कोई परेशानी नहीं होगी। हमारा झण्डा स्पष्ट होगा। इसलिए आइए हम इस प्रकार इस युद्ध को लड़ें, इन सत्यों से जूझें।
ये आधार अगले कुछ सप्ताहों में हमारी अगुवाई करेंगे। लूका 16. इस परिच्छेद को पढ़ने से पहले, मैं आपको दिखाना चाहता हूँ यीशु किस से बात कर रहे हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अध्याय 14 पर आएँ। अध्याय 14 के अन्त में वह परिच्छेद है जिसका हमने कुछ सप्ताह पूर्व अध्ययन किया था, 14:25–35. जब यीशु कहते हैं, "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों, वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, अपना क्रूस न उठाए, अपना सब कुछ त्याग न दे। हमने इस परिच्छेद का अध्ययन किया था। ये कठिन वचन हैं।

फिर आप लूका 15 पर आते हैं। यह नये नियम में, विशेषतः सुसमाचारों में अधिक प्रचलित वचनों में से एक है। इसमें खोई हुई भेड़ और खोए हुए सिक्के के दृष्टान्त के बाद अन्त में उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त है।

शुरूआत में ही आपको याद आएगा, देखें क्या हो रहा है। *"सब चुंगी लेने वाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उसकी सुनें। पर फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे, 'यह तो पापियों से मिलता है और उनके साथ खाता है।'"* (लूका 15:1–2). अतः आपके पास यह तस्वीर है।

फरीसी, धार्मिक समूह, उस दिन के धार्मिक लोग आत्मिक रूप से जरूरतमन्दों, चुंगी लेने वालों और पापियों के प्रति चिन्ता के कारण यीशु की आलोचना कर रहे हैं। और यीशु इस तथ्य के बारे में उनके विचारों का सामना करते हैं कि उनसे अपेक्षित है कि वे इन लोगों की खातिर जीवन बिताएँ, और अध्याय 15 में वह इसी के बारे में, उनके प्रति अपने प्रेम के बारे में बात करता है।

यही हम देख रहे हैं। यह इस श्रंखला के विकास के अनुरूप है। हमने पिछले दो सन्देशों में यह देखा है कि खोए हुओं के लिए निर्णायक तरस और निर्णायक अनिवार्यता का क्या अर्थ है, उन लोगों के लिए जो मसीहरहित अनन्त काल की ओर बढ़ रहे हैं, जो अनन्त नरक के मार्ग पर अग्रसर हैं, और कैसे हमें अपना जीवन उनकी खातिर बिताना चाहिए जो मसीह को नहीं जानते हैं। यह तस्वीर है और लूका 15 में यीशु इस बात पर धार्मिक समूह का सामना कर रहे हैं, और फिर वह विषय बदलते हैं, जैसे अब हम बदल रहे हैं, और संपत्ति के बारे में बात करते हैं।
लूका 16:1 में वह अपने चेलों से बात करना आरम्भ करते हैं, और वह एक दृष्टान्त बताते हैं। लूका 16 में इस दृष्टान्त का मुख्य बिन्दू यह है कि हमें अपने धन का प्रयोग अपनी सेवा के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य की सेवा के लिए करना चाहिए, हमारे संसाधन और हमारी संपत्ति और हमारा धन परमेश्वर के राज्य की प्रगति हेतु प्रयोग किए जाने के लिए है न कि हमारी अपनी विलासिता के लिए।

और पुनः, यहाँ वह धार्मिक समूह का सामना कर रहा है, और इसे हम पद 14 से जानते हैं। देखें वहाँ क्या लिखा है। अपनी बात समाप्त करने के बाद, यीशु उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो धन से प्रेम करते हैं और धन के प्रति समर्पित हैं, पद 14 में वह कहते हैं, *"फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे। उसने उनसे कहा, 'तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।'"* (लूका 16:14–15).

यह उसकी पृष्ठभूमि है जो हम पद 19 में पढ़ने वाले हैं। कृपया इससे न चूकें। ध्यान दें।

यीशु धार्मिक लोगों से बात कर रहे हैं, जो अपने प्रभाव के कारण, धन के प्रेम के कारण इतने अन्धे हो गए हैं, कि वे अपनी धार्मिक भक्ति के बीच में अपनी प्रतिष्ठा को सही ठहरा रहे हैं। मैं इसे एक बार और दोहराता हूँ। यीशु धार्मिक लोगों से बात कर रहे हैं, जो अपनी प्रतिष्ठा में, अपनी दौलत में इतने खो गए हैं कि इसका उन्हें कोई अहसास ही नहीं है, और वे वस्तुओं से प्रेम करते हुए अपनी धार्मिक भक्ति में लगे हुए हैं। यही तस्वीर है कि यीशु यहाँ किस से बात कर रहे हैं।

यह हमारे लिए एक वचन है, और जो लोग अपने धन से प्रेम करते हैं और उसे अपने धर्म में सही ठहराते हैं उनसे यीशु ऐसा कहते हैं। पद 19,

> *"एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहनता और प्रति दिन सुख–विलास और धूम–धाम के साथ रहता था। लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था, और वह चाहता था कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया, और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाईं, और दूर से अब्राहम की गोद में लाजर को देखा। तब उसने पुकार कर कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी अँगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।' परन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएँ : परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें; और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।' उसने कहा, 'तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।' अब्राहम ने उससे कहा, 'उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।' उसने कहा, 'नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।' उसने उससे कहा, 'जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे।'"* (लूका 16:19–31).

परमेश्वर, हमारी प्रार्थना है आप हमारी सहायता करें कि हमारा प्रत्युत्तर फरीसियों के समान न हो। परमेश्वर आप हमारी सहायता करें कि जब हम आपके वचनों को सुनते हैं तो हम आपके वचनों का मजाक न उड़ाएँ या अपने आपको सही न ठहराएँ। हमारी सहायता करें कि हम सच्चाई से उन्हें सुनें और तीव्रता से उनका पालन करें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

कहानी...

एक दैवीय विरोधाभास

मैं चाहता हूँ कि हम तीन अलग–अलग लेन्सों से इस कहानी को देखें: पहला, एक विरोधाभास जो कहानी पर हावी है, एक दैवीय विरोधाभास। यह इस कहानी में है, और पूरे पवित्रशास्त्र में है। विरोधाभास यह है। पहला, परमेश्वर तरस के साथ कंगालों की आवश्यकताओं का उत्तर देता है।

यह धनवान व्यक्ति और लाजर की बहुत ही रूचिकर कहानी है। यह यीशु द्वारा कही गई एकमात्र ऐसी कहानी, ऐसा दृष्टान्त है जिसमें किसी का नाम बताया गया है, और यह इसके महत्व को बताता है। लाजर का नाम बताने का एक कारण है। उसके नाम का अर्थ है, "जिसकी सहायता परमेश्वर करता है," या "परमेश्वर मेरा सहायक है।" उसके नाम का यही अर्थ है।

आइए हम शुरूआत में ही इसे स्पष्ट करते हैं। यहाँ पवित्रशास्त्र हमें यह नहीं सिखाता है, न ही हमें लूका 16 को इस विचार से जोड़ना चाहिए कि यदि आप भौतिक रूप से गरीब हैं तो आप स्वतः ही स्वर्ग में जायेंगे, या यदि आपके पास भौतिक धन है तो आप स्वतः ही नरक में जायेंगे। पवित्रशास्त्र हमें यह नहीं सिखा रहा है, और हम इसे देखेंगे।

साथ ही, पवित्रशास्त्र हमें सिखा रहा है कि परमेश्वर कंगालों की आवश्यकताओं के प्रति जोश रखता है, तरस खाता है और देखभाल करता है। वह उनका सहायक है। यही इस निर्धन लाजर की कहानी है जो घावों से भरा डेवढ़ी के पास बैठा है, मेज से गिरने वाले टुकड़ों को खाता है और कुत्ते उसके घावों को चाटते हैं। और परमेश्वर इसी की सहायता करता है।

लूका 16 में यही तस्वीर है। यह लूका के पूरे सुसमाचार में है। यह पूरे पवित्रशास्त्र में है। हमार पास सारे स्थानों को देखने का समय नहीं है, परन्तु मैं आपको पवित्रशास्त्र में अलग–अलग स्थानों पर दिए गए कुछ

वचन बताकर उत्साहित करना चाहता हूँ ताकि आप बाद में उसे देख सकें जो हमें बताते हैं कि परमेश्वर निर्धनों के प्रति चिन्ता के द्वारा हमें अपनी महानता दिखाता है।

1शमूएल 2:8, *"वह कंगाल को धूलि में से उठाता; और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उनको अधिपतियों के संग बैठाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी बनाए।"* अब यह उसके विपरीत है जिसे हम उस समय के या आज के धर्मों में महानता की तस्वीर के रूप में देखते हैं। आज आप संसार के कुछ निर्धन देशों में जाएँ और आप ऐसी धार्मिक प्रणाली को देखेंगे जो निर्धनों का तिरस्कार करती है, और परमेश्वर निर्धनों पर तरस खाकर अपनी महानता दिखाता है। वह कंगाल को धूलि में से उठाता है, 1 शमूएल 2:8.

अय्यूब 34:28 कहता है, *"यहाँ तक कि उनके कारण कंगालों की दोहाई उस तक पहुँची और उसने दीन लोगों की दोहाई सुनी।"* वह उनकी पुकार को सुनता है। वह निर्धन की पुकार को अनसुनी नहीं करता। वह निर्धन को सुनता है।
भजन 22:26, इनमें से शेष भजन संहिता में हैं, 22:26, *"नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे।"* संसार ने उन्हें अनदेखा किया है। परमेश्वर के द्वारा वे भोजन करके तृप्त होते हैं। भजन 35:10, "(यहोवा) दरिद्रों को बचाता है।" भजन 68:10, परमेश्वर निर्धनों की जरूरत को पूरा करता है। जब कोई और निर्धन की सुधि नहीं लेता, यहोवा निर्धन की सुधि लेता है। भजन 82:3, परमेश्वर निर्धनों और कंगालों के अधिकारों की रक्षा करता है। वह उनके अधिकारों की रक्षा करता है। भजन 113:7, परमेश्वर दरिद्र को उठाता है, वही तस्वीर जो हमने 1 शमूएल में देखी थी। और फिर भजन 140:12, *"यहोवा दीन जन का और दरिद्रों का न्याय चुकाता है।"*

पुराने नियम में हम इसी तस्वीर को देखते हैं। परमेश्वर ऐसे परमेश्वर के रूप में जाना जाता है जो दरिद्रों को संभालता है। यही बाइबल का परमेश्वर है।

फिर आप लूका में आते हैं। मेरे साथ लूका अध्याय 4 पर चलें। मैं आपको दिखाता हूँ कि कैसे यीशु इसका मानवीय रूप है जब हम उसे नये नियम में देखते हैं। यीशु तरस के साथ निर्धनों की जरूरतों का प्रत्युत्तर देते हैं। मैं आपको दिखाना चाहता हूँ, लूका 4. हम पद 17 से आरम्भ करेंगे।

यह लूका के सुसमाचार में यीशु की सेवकाई के आरम्भ में है। परीक्षा के पश्चात् यीशु का परिचय इस प्रकार दिया जाता है। यह उसकी सेवकाई का उसका परिचय है, और मैं चाहता हूँ आप देखें कि लूका अपने पाठकों से यीशु का परिचय कैसे कराता है। पद 17, इस समय यीशु आराधनालय में है, *"यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था।"* अपनी सेवकाई के आरम्भिक समय में यीशु यशायाह 61:1 से उद्धृत करते हैं, *"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है।"* (लूका 4:18).

यह यीशु का परिचय है। मैं यह हूँ। मैं कंगालों को सुसमाचार सुनाता हूँ। यही मेरी परिभाषा है। *"और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।"* (लूका 4:18–19).

और आप अध्याय 6 पर आते हैं। अध्याय 6 पद 20 को देखें, *"मैं कंगालों को सुसमाचार सुनाने आया हूँ।"*

वह उनसे क्या प्रचार कर रहा है? लूका 6, पद 20 में देखें, *"तब उसने अपने चेलों की ओर देखकर कहा, 'धन्य हो तुम जो दीन हो।'"* (लूका 6:20). ये उस संस्कृति के तिरस्कृत, कंगाल, निर्धन, बेसहारा लोग हैं, *"धन्य हो तुम जो दीन हो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है। धन्य हो तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि तृप्त किए जाओगे। धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हँसोगे।"* (लूका 6:20–21).

तस्वीर है बेसहारा, निर्धन, कंगाल; इन्हीं के लिए यीशु आए हैं। वास्तव में आप लूका 7 में आते हैं, मेरे साथ पद 20 को देखें। यहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की ओर से कुछ लोग कुछ सवाल पूछने आते हैं, यह पता लगाने कि क्या यीशु ही वह मसीह है जिसका वायदा किया गया है या नहीं।

पद 20 में इसे सुनें, *"उन्होंने उसके पास आकर कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि क्या आने वाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट देखें?'"* और यीशु इस तरह जवाब देते हैं, *"उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धों को आँखें दीं; और उसने उनसे कहा"* (लूका 7:21–22). यीशु अपने मसीह होने के तथ्य को इस प्रकार प्रमाणित करते हैं, *"जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते–फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"* किसे, "कंगालों को।" (लूका 7:22).

इसी से आप जानते हैं कि यीशु वास्तविक हैं, क्योंकि वह कंगालों को सुसमाचार सुना रहे हैं। यीशु पुराने नियम में परमेश्वर की तस्वीर को लेते हैं, परमेश्वर का तरस, पुराने नियम में कंगालों की आवश्यकता और इसे नये नियम में जारी रखते हैं। यही वास्तविकता है। कंगालों के पास सहायक के रूप में परमेश्वर है। जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं वह गहरे तरस के साथ कंगालों की आवश्यकताओं का प्रत्युत्तर देता है।

अब यहाँ वह विरोधाभास है जिसे हम लूका 16 में देखते हैं। परमेश्वर तरस के साथ कंगालों की आवश्यकताओं का प्रत्युत्तर देता है। परमेश्वर उन लोगों को बिल्कुल अलग प्रकार से प्रत्युत्तर देता है जो कंगालों की उपेक्षा करते हैं। वह कंगालों की उपेक्षा करने वालों को दोषी ठहराता है।

अब मैं कंगालों की उपेक्षा की तस्वीर पर बल देना चाहता हूँ। अभी हमने कुछ पल पहले जो कहा था उस पर वापस लौटें। पवित्रशास्त्र यहाँ यह नहीं सिखा रहा है कि लोग नरक में इसलिए जाते हैं क्योंकि उनके पास धन है। हम जानते हैं कि लूका 16 में इस व्यक्ति के पास धन था। हम उसके वस्त्रों तथा उसके भोजन से जानते हैं कि वह सुख–विलास के साथ जीता था।

परन्तु लूका 16 में उसके नरक में होने का क्या कारण है? इसलिए नहीं कि वह धनी था। हम आने वाले दिनों में इसके बारे में बात करेंगे। धन अपने आप में, संपत्ति अपने आप में, नैसर्गिक रूप से बुरी नहीं है। धन अपने आप में बुरा नहीं है। यहाँ पर हम इस तस्वीर को नहीं देखते हैं। हम यहाँ एक ऐसे व्यक्ति को देख रहे हैं जिसने अपना धन अपने सुख–विलास में लगाया और कंगालों की उपेक्षा की, और परमेश्वर ऐसे लोगों को नरक में भेजता है। उन लोगों को सुख–विलास में जीते हैं और कंगाल की उपेक्षा करते हैं, ऐसे लोग परमेश्वर के सामने दोषी ठहरते हैं।

यह पश्चिम की कलीसिया के लिए एक दर्पण है। दृश्य यह है। हम मलमल के वस्त्र पहनकर अरबों डॉलर की ईमारतों में एकत्रित होते हैं। बाहर, पार्किंग की सुविधा है, और वास्तव में अरबों डॉलर के मूल्य की कारें हैं। अपनी दिनचर्या को समाप्त करने के पश्चात्, हम उन कारों में बैठते हैं, रास्ते में अपने भोजन पर हजारों डॉलर खर्च करते हैं, और हजारों डॉलर के घरों में पहुँचते हैं, जहाँ हम शेष सप्ताह के लिए सुरक्षित हैं, और अगले सप्ताह फिर हम एक साथ इकट्ठे होते हैं।

इस बीच, द्वार पर कंगाल हैं। वे यहाँ और संसार भर में हैं। आपको ऐसे लोगों को खोजने के लिए उत्तर या दक्षिण में अधिक दूर यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है जिनके पास पानी नहीं है, रसोई नहीं है, खाना नहीं है। इसे संसार में विस्तृत करें और आप पायेंगे कि हमारे द्वार पर भूखे लोग हैं। आज इस थोड़े से समय के दौरान ही लगभग 1,000 बच्चों की मृत्यु हो चुकी है क्योंकि उनके पास खाने के लिए भोजन नहीं था। आज एसे तीस हजार बच्चे मर जायेंगे, या तो भुखमरी से या किसी ऐसे रोग से जिस का ईलाज हो सकता है।

वास्तविकता यह है कि यदि हमारे बच्चे द्वार पर होते तो वे अब तक मर चुके होते, सब के सब। परन्तु अच्छी बात यह है कि हम अपने टीवी की विशाल स्क्रीन पर चैनल बदल सकते हैं और हमें इन सारी वास्तविकताओं को देखने की जरूरत नहीं है। और हम इन यथार्थों की उपेक्षा कर सकते हैं। हम इन यथार्थों की उपेक्षा कर रहे हैं। हम बचा–खुचा द्वार के बाहर कंगालों की ओर फेंक रहे हैं। और जब उनमें से लाखों लोग क्षीण होकर खामोशी से भुखमरी की कगार पर घूम रहे हैं, हम इस प्रकार जीते हैं जैसे उनको कोई अस्तित्व ही नहीं है। और बाइबल का परमेश्वर कंगालों की चिन्ता करता है और वह उन धनवानों को दोषी ठहराता है जो उनकी उपेक्षा करते हैं।

यह पहली सदी के धार्मिक प्रतिष्ठित लोगों के लिए चेतावनीसूचक परिच्छेद है, और यह चेतावनीसूचक परिच्छेद है, और केवल यही परिच्छेद नहीं। यह पूरे पवित्रशास्त्र में है। यह कोई अकेली घटना नहीं है। मैं आपको दिखाना चाहता हूँ, क्योंकि आपको इसे ईमानदारी से देखने की आवश्कता है। मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि पवित्रशास्त्र हमें इसके बारे में क्या सिखाता है कि परमेश्वर उन लोगों को कैसे प्रत्युत्तर देता है जो अपने सुख–विलास में जीते हैं और कंगालों की उपेक्षा करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 15:7, मैं आपको यहाँ की तस्वीर दिखाना चाहता हूँ। हम परमेश्वर से कुछ चौंकाने वाले वचनों को देखने वाले हैं, फिर हम सोचेंगे कि जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं क्या वह वास्तव में अपने लोगों से ऐसी बातें कहता है, और वह कहता है, और ये वचन हमें उसके चरित्र की झलक दिखाते हैं।

हम आधार से शुरू करते हैं, व्यवस्थाविवरण 15:7. यह व्यवस्था है, लैव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण। यह व्यवस्था के बीच में एक स्थान है, यह हर जगह पर है, कंगालों के लिए परमेश्वर का प्रबन्ध। मैं चाहता हूँ आप देखें कि वह अपने लोगों से क्या कहता है। पद 7, *"जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसके*

किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयों में से कोई तेरे पास दरिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिए न तो अपना हृदय कठोर करना, और न अपनी मुट्ठी कड़ी करना; जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसकी जितनी आवश्यकता हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना।" (व्यवस्थाविवरण 15:7–8).

पद 10 पर आएँ। परमेश्वर कंगालों के बारे में अपने लोगों से बात कर रहा है, *"तू उसको अवश्य देना, और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे; क्योंकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिनमें तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष देगा। तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएँगे; इसलिए मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ,"* मैं तुझे आज्ञा देता हूँ (व्यवस्थाविवरण 15:10–11). आप जानते हैं, यह रूचिकर है, आप निर्धनता के बारे में बात करना आरम्भ करते हैं और लोग कई बार कहते हैं, "निर्धन लोग तो हमेशा ही रहेंगे।" हम इसे अपने आपको निर्धनों को न देने के बहाने के रूप में प्रयोग करते हैं। परमेश्वर उसका प्रयोग एक आज्ञा के आधार के रूप में करता है, *"मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ, कि तू अपने देश में अपने दीन–दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना।"* (व्यवस्थाविवरण 15:11).

यह परमेश्वर की आज्ञा है। तुम निर्धनों को दो। निर्धनों को खुले हाथों से दो। अपने देश में दीन–दरिद्रों को उदारता और खुले हाथों से दो। यह एक आज्ञा थी।

अब लैव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण में डाली गई उस नींव का क्या हुआ? परमेश्वर के लोग इस आज्ञा को अनदेखा करने लगे और उसे पीछे छोड़ दिया।

जल्दी से मेरे साथ यशायाह 3 पर आएँ। मैं आपको भविष्यद्वक्ताओं में कुछ स्थानों को दिखाना चाहता हूँ। मैं उनमें से कुछ आपको दिखाना चाहता हूँ, यशायाह 3. परमेश्वर के लोगों के पास यह आज्ञा थी, और इसके विपरीत उन्होंने सुख–विलास में जीने और कंगाल की उपेक्षा करने को चुना, और जब लोग अपने सुख–विलास में जीते हैं और कंगाल की उपेक्षा करते हैं तो परमेश्वर अपने लोगों से यह कहता है। वह कहता है।

यशायाह 3, मेरे साथ पद 13 को देखें, इसे सुनें। देखें परमेश्वर उनकी प्रतिष्ठा को कैसे संबोधित करता है। पद 13, *"यहोवा देश देश के लोगों से मुकदमा लड़ने और उनका न्याय करने के लिए खड़ा है। यहोवा अपनी प्रजा के वृद्ध और हाकिमों के साथ यह विवाद करता है: 'तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है, और*

दीन लोगों का धन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है।'" (यशा. 3:13–14). बाहर कंगाल हैं, तुम अपने घरों में सारी वस्तुओं का लुत्फ उठा रहे हो। कंगालों को भोजन की जरूरत है। *"दीन लोगों का धन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है। सेनाओं के प्रभु यहोवा की यह वाणी है, 'तुम क्यों मेरी प्रजा को दलते, और दीन लोगों को पीस डालते हो।'"* (यशा. 3:14–15).

और वह इस प्रकार प्रत्युत्तर देता है,

> *यहोवा ने यह भी कहा है, "क्योंकि सिय्योन की स्त्रियाँ घमण्ड करतीं और सिर ऊँचे किए आँखें मटकातीं और घुँघरूओं को छमछमाती हुई ठुमक ठुमक चलती हैं, इसलिए प्रभु यहोवा उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को उघरवाएगा।" उस समय प्रभु घुँघरूओं, जालियों, चँद्रहारों, झुमकों, कड़ों, घूँघटों, पगड़ियों, पैकरियों, पटुकों, सुगन्धपात्रों, गण्डों, अँगुठियों, नथों, सुन्दर वस्त्रों, कुर्त्तियों, चद्दरों, बटुओं, दर्पणों, मलमल के वस्त्रों, बुन्दियों, दुपट्टों इन सभों की शोभा को दूर करेगा। सुगन्ध के बदले सड़ाहट, सुन्दर कर्धनी के बदले बन्धन की रस्सी, गुँथे हुए बालों के बदले गंजापन, सुन्दर पटुके के बदले टाट की पेटी, और सुन्दरता के बदले दाग होंगे। तेरे पुरूष तलवार से, और शूरवीर युद्ध में मारे जाएँगे। और उसके फाटकों में साँस भरना और विलाप करना होगा; और वह भूमि पर अकेली बैठी रहेगी।* (यशा.3:16–26).

ये उन लोगों से परमेश्वर के कठोर वचन हैं जो भोग–विलास में जीते हैं और कंगालों की उपेक्षा करते हैं। यिर्मयाह की पुस्तक में आएँ। यिर्मयाह 5, मैं चाहता हूँ आप देखें कि भविष्यद्वक्ता यहाँ क्या कहता है। ये भविष्यद्वक्ता लोकप्रिय व्यक्ति नहीं थे। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के वचनों को सुनना पसन्द नहीं करता है। परमेश्वर अपने लोगों से कह रहा है।

यिर्मयाह 5:26. इसे सुनें, परमेश्वर कहता है,

> *मेरी प्रजा में दुष्ट लोग पाए जाते हैं; जैसे चिड़ीमार ताक में रहते हैं, वैसे ही वे भी घात लगाए रहते हैं। वे फन्दा लगाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेते हैं। जैसा पिंजड़ा चिड़ियों से भरा हो, वैसे ही उनके घर छल से भरे रहते हैं; इसी प्रकार वे बढ़ गए और धनी हो गए हैं। वे मोटे और चिकने हो गए हैं। बुरे कामों में वे सीमा को पार कर गए हैं; वे न्याय, विशेष करके अनाथों का न्याय नहीं चुकाते; इस से उनका काम सफल नहीं होता : वे कंगालों का हक भी नहीं दिलाते।*

इसलिए यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं इन बातों का दण्ड न दूँ? क्या मैं ऐसी जाति से पलटा न लूँ? (यिर्मयाह 5:26–29).

"मैं ऐसी बातों का दण्ड देता हूँ," परमेश्वर कहता है। यहेजकेल 16 पर आएँ। अब मैं यहाँ पर सावधान रहना चाहता हूँ। हम पुराने नियम के लोगों और हमारे बीच में प्रत्यक्ष तुलना नहीं कर रहे हैं। परन्तु, हम देख रहे हैं कि परमेश्वर पुराने नियम में उन लोगों को कैसे प्रत्युत्तर देता है जो कंगाल की उपेक्षा करते हैं, और एक ही पल में हम उसे नये नियम में लेकर आयेंगे।

यहेजकेल 16, यह विशेष रूप से रूचिकर है क्योंकि आपको पुराने नियम में सदोम और अमोरा याद हैं? नाश कर दिए। जब हम उस कहानी को पढ़ते हैं तो हमारे मन में पहला विचार यह आता है, हमारे मन में पहला विचार यह आता है कि परमेश्वर ने लैंगिक पाप के कारण, समलैंगिकता के कारण सदोम और अमोरा से इतनी घृणा करता है कि परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देता है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि यहेजकेल क्या कहता है।

यहेजकेल 16:48. वह सदोम के बारे में बात कर रहा है, *"प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरी बहन सदोम ने अपनी पुत्रियों समेत तेरे और तेरी पुत्रियों के समान काम नहीं किए।"* दूसरे शब्दों में, तू उससे भी बुरा कर रही है। सुनें वह क्या कहता है, पद 49, *"देख, तेरी बहन सदोम का अधर्म यह था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड करती, पेट भर भरके खाती और सुख चैन से रहती थी; और दीन दरिद्र को न संभालती थी।"* यह सदोम का पाप था, ऐसा नहीं है कि दूसरी बात वहाँ नहीं थी। वह भी था। पवित्रशास्त्र इसका संकेत देता है, परन्तु यह वहाँ था।

यह हमारे चुनींदा नैतिक क्रोध को लताड़ता है। अधिकाँश लोग समलैंगिकता या समलैंगिक विवाहों से भयभीत हो जाते हैं, और पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से इन बातों के बारे में बताता है। साथ ही, वह कलीसिया कहाँ है जो दीन और दरिद्र की उपेक्षा से भयभीत होती हो? और हम अँगुली उठाते हैं। देखो हमारी संस्कृति में क्या हो रहा है। भाइयो और बहनो, अपने अन्दर देखो। अपने दिलों में झाँककर देखो कि वहाँ क्या हो रहा है।

आमोस पर आएँ। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ आमोस 2 को देखें। यह अन्तिम भविष्यद्वक्ता है जिसे हम देखेंगे। यहाँ पर हम कुछ अलग–अलग स्थानों को देखेंगे, आमोस 2:6, एक और अलोकप्रिय भविष्यद्वक्ता।

आमोस 2:6–7:

> *यहोवा यों कहता है : "इस्राएल के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने निर्दोष को रूपये के लिए और दरिद्र को एक जोड़ी जूतियों के लिए बेच डाला है। वे कंगालों के सिर पर की धूल का भी लालच करते, और नम्र लोगों को मार्ग से हटा देते हैं।"*

मेरे साथ अगले अध्याय पर चलें, अध्याय 4. आमोस 4:1, देखें वह क्या कहता है, वह क्या करने वाला है। 4:1, *"हे बाशान की गायो, यह वचन सुनो, तुम जो सामरिया पवर्त पर हो, जो कंगालों पर अन्धेर करतीं, और दरिद्रों को कुचल डालती हो, और अपने अपने पति से कहती हो, 'ला, दे हम पीएँ।' परमेश्वर यहोवा अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन आने वाले हैं, कि तुम काँटों से, और तुम्हारी सन्तान मछली की बंसियों से खींच ली जाएँगी। तुम बाड़े के नाकों से होकर सीधी निकल जाओगी और हर्म्मोन में डाली जाओगी, यहोवा की यही वाणी है।"* (आमोस 4:1–3).

परमेश्वर अपने लोगों से इस प्रकार बात करता है। ये विस्मयकारी वचन हैं। आमोस में एक और जगह, आमोस 8. आमोस 8:3 को देखें। हम जिस परमेश्वर की आराधना करते हैं उस परमेश्वर के वचनों को हम देख रहे हैं।

पद 3,

> *परमेश्वर यहोवा की वाणी है, "उस दिन राजमन्दिर के गीत हाहाकार में बदल जायेंगे, और शवों का बड़ा ढ़ेर लगेगा; और सब स्थानों में वे चुपचाप फेंक दिए जाएँगे।" यह सुनो, तुम जो दरिद्रों को निगलना और देश के नम्र लोगों को नष्ट करना चाहते हो, जो कहते हो, "नया चाँद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें? विश्रामदिन कब बीतेगा कि हम अन्न के खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल को भारी कर दें, और छल से दण्डी मारें, कि हम कंगालों को रूपया देकर, और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियाँ देकर मोल लें, और निकम्मा अन्न बेचें?" यहोवा, जिस पर याकूब को घमण्ड करना उचित है, वही अपनी शपथ खाकर कहता है, "मैं तुम्हारे किसी काम को कभी न भूलूँगा। क्या इस कारण भूमि न काँपेगी? क्या उन पर के सब रहने वाले विलाप न करेंगे? यह देश सब का*

सब मिस्र की नील नदी के समान होगा, जो बढ़ती है, फिर लहरें मारती, और घट जाती है।" परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, "उस समय मैं सूर्य को दोपहर के समय अस्त करूँगा, और इस देश को दिन दुपहरी अन्धियारा कर दूँगा। मैं तुम्हारे पर्वों के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊँगा, और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके विलाप के गीत गवाऊँगा, और तुम सब के सिरों को मुँडाऊँगा, और ऐसा विलाप कराऊँगा जैसा एकलौते के लिए होता है, और उसका अन्त कठिन दुख के दिन का सा होगा।" (आमोस 8:3–10).

परमेश्वर कहता है, "जब तुम भोग–विलास में जीते हो और कंगालों की उपेक्षा करते हो, तो मैं तुम पर यह लाने वाला हूँ।" यह पुराना नियम है। क्या यह नये नियम में भी है? बिल्कुल। मेरे साथ लूका पर वापस लौटें। मेरे साथ लूका 6 को देखें।

लूका 6:20, हमने कुछ समय पूर्व इसे पढ़ा था। *"तब उसने अपने चेलों की ओर देखकर कहा, 'धन्य हो तुम जो दीन हो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है। धन्य हो तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि तृप्त किए जाओगे। धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हँसोगे।"* (लूका 6:20–21). परमेश्वर कंगालों से यही कहता है।

सुनें पद 24 में वह क्या कहता है, *"परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। हाय तुम पर जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होगे। हाय तुम पर जो अब हँसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे।"* (लूका 6:24–25).

क्या आप इस तस्वीर को देख रहे हैं, यह विरोधाभास कि परमेश्वर कंगालों को कैसे प्रत्युत्तर देता है और उन्हें कैसे प्रत्युत्तर देता है जो भोग–विलास के लिए कंगालों की उपेक्षा करते हैं? कंगाल की उपेक्षा से परमेश्वर क्रोधित हो जाता है और वह मनुष्य को नरक में भेज देता है। पवित्रशास्त्र यही सिखा रहा है।

यह हमारे लिए एक चेतावनी है। एक लेखक ने कहा कि धनवान व्यक्ति और लाजर की कहानी को अपनी सुसज्जित मेज पर बैठकर पढ़ते समय हमारे हाथों में विस्फोट हो जाना चाहिए, जबकि तीसरी दुनिया बाहर खड़ी हो। पिछले कुछ सप्ताहों से हम उनके बारे में बात कर रहे हैं जो अनन्त नरक की ओर जा रहे हैं, और अब हम इस परिच्छेद पर आते हैं, और हम यहाँ पर इस खतरे को देखते हैं कि आत्मिक रूप से धोखा खाए धार्मिक व्यक्ति हो सकते हैं, आप भी उसी मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं। यही बिन्दू है।

एक अनन्त परिणाम

विरोधाभास परिणाम की ओर लाता है, एक अनन्त परिणाम। तस्वीर यह है। यहाँ लूका 6 और फिर लूका 16 में, उलटने के सिद्धान्त को दिखाया गया है। एक दिन आ रहा है जब संसार उलट दिया जाएगा। हम में से बहुत से लोग इस संसार में जिन परिस्थितियों में जीए हैं, उनके लिए परिस्थितियाँ बिल्कुल उलट जायेंगी। यही लूका 16 की सम्पूर्ण तस्वीर है।

एक मोड़ आ रहा है और बुद्धिमान यहाँ रहते हुए अपने आपको उस मोड़ के लिए तैयार करेंगे। यहाँ एक अनन्त परिणाम है। पवित्रशास्त्र स्पष्टता से सिखा रहा हैः यदि हम भोग–विलास में जीते हैं और कंगाल की उपेक्षा करते हैं तो, इससे न चूकें, पृथ्वी हमारा स्वर्ग होगी। यही लूका 6 ने अभी कहा है। यही लूका 16 कहता है। लूका 16 हमें उन सारी अच्छी वस्तुओं के बारे में बताता है जो इस व्यक्ति के पास थीं, इस धनवान व्यक्ति के पास, जब वह पृथ्वी पर था। धन्य हो तुम जो धनी हो। धन्य हो तुम जो अब तुम्हारे पास भोजन है। धन्य हो तुम जो अब ये वस्तुएँ तुम्हारे पास हैं। पृथ्वी हमारा स्वर्ग होगी। तुम्हारे पास सब कुछ होगा।

मत्ती 6 में यीशु इसी के बारे में बात कर रहे थे जब वह कहते हैं, "यदि तुम अपने प्रतिफल के रूप में मनुष्यों की प्रशंसा चाहते हो, तो वह तुम्हें मिल जाएगी।" जब तक यह मिलती है इसका आनन्द लो क्योंकि यही तुम्हारा प्रतिफल है। यदि तुम इस पृथ्वी पर वस्तुएँ और सुख–विलास चाहते हो, तो इस समुदाय में यह तुम्हें मिल जाएगा और उसका आनन्द लो। अभी इसका आनन्द ले लो, क्योंकि पृथ्वी तुम्हारा स्वर्ग होगी और अनन्तकाल तुम्हारा नरक होगा, मृतकों का स्थान।
लूका 16 में चार बार यातना शब्द का प्रयोग किया गया है। यही तस्वीर है। जो कंगालों की उपेक्षा करते हैं, कंगाल को अनदेखा करते हैं, भोग–विलास में लगे रहते हैं वे अपने आपको हमेशा के लिए ऐसी खाई में पायेंगे जहाँ से कोई वापस नहीं आ सकता। इस परिच्छेद में यही बात इतनी भयानक है, क्योंकि यहाँ धनवान व्यक्ति अनुग्रह और दया की भीख माँग रहा है। वह उसके लिए गिड़गिड़ा रहा है और अनुग्रह तथा दया का समय निकल चुका है। वह अतीत की बात हो चुकी है।

एक दिन आ रहा है, जब कंगाल की उपेक्षा, भोग–विलास में जीने और कंगाल की उपेक्षा करने को माफ नहीं किया जाएगा; दण्ड दिया जाएगा। उसका अनन्त दण्ड दिया जाएगा।

क्या यह हमें भयभीत करता है? क्या हम वास्तव में अपने जीवनों और हमारी संस्कृति और हमारे समुदाय, हमारे धार्मिक समुदाय को देखकर कह सकते हैं कि हम कंगालों की देखभाल करने और भोग–विलास में न

जीने की परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे हैं? बिल्कुल नहीं, हम ऐसा नहीं कह सकते। मेरे जीवन में, हमारे जीवनों में, हमारे समुदाय में हम यह नहीं कह सकते हैं। तो हम कैसे विश्वास कर सकते हैं कि हम अपना अनन्त काल उसके प्रेम में बितायेंगे न कि उससे अलग होकर उसके दण्ड में?

मैं जानता हूँ कि इस समय लोग असहज होकर सोच रहे हैं, "क्या तुम यह कह रहे हो कि मेरा उद्धार इस पर निर्भर है कि मैं कंगालों को कितना देता हूँ?" पवित्रशास्त्र ऐसा नहीं सिखाता है, यह पवित्रशास्त्र की शिक्षा नहीं है।

एक स्पष्ट विकल्प

परन्तु तस्वीर यह है। यह स्पष्ट विकल्प की ओर ले जाता है। यहाँ दो विकल्प हैं। मैं चाहता हूँ आप यहाँ मेरे साथ बने रहें, एक स्पष्ट विकल्प।

पहला विकल्प, पहला विकल्प है कंगालों की उपेक्षा करने वाले खोखले धर्म में बने रहना। यह लूका 16 के श्रोताओं के सामने एक विकल्प था और आज हमारे लिए यह एक विकल्प है। उस खोखले धर्म में बने रहना जो कंगाल की उपेक्षा करता है। इससे न चूकें। यह एक धार्मिक व्यक्ति है जो नरक में है। यहाँ लूका 16 में यह धार्मिक व्यक्ति है जो नरक में है।

वह पुकारता है, "हे पिता अब्राहम।" अब्राहम कहता है, "पुत्र।" इस व्यक्ति ने सोचा था कि वह परमेश्वर के लोगों में था। उसने सोचा सब कुछ ठीक था। वह एक धोखा खाया हुआ धार्मिक व्यक्ति था जो सोचता था कि सब कुछ ठीक है, परन्तु वह कंगालों की उपेक्षा करते हुए भोग–विलास में जीवन बिताता था; खोखला धर्म।

अब हम यहाँ पर यह सोचने की गलती कर सकते हैं कि यदि उसने इतना कंगालों को दिया होता तो वह स्वर्ग में होता, क्योंकि इससे स्वर्ग का मिलना इस पर निर्भर हो जाता कि आप कंगालों को कितना देते हैं, और पवित्रशास्त्र यह नहीं सिखाता है। इससे न चूकें। कंगालों की देखभाल करना उद्धार में वैकल्पिक अतिरिक्त नहीं है। निर्धनों की देखभाल करना एक विकल्प नहीं है। अपने धन और अपनी संपत्तियों को खोए हुओं के लिए और निर्धनों के लिए खर्च करना उद्धार में वैकल्पिक अतिरिक्त नहीं है। यह मसीह के अनुयायियों के लिए एक संभावना नहीं है। इसके विपरीत, कंगाल की देखभाल उद्धार का अनिवार्य प्रमाण है।

मैं दो स्थानों पर इसे आपको दिखाता हूँ, लूका 19. लूका 19 पर आएँ। जक्कई नामक एक व्यक्ति है। वह एक चुंगी लेने वाला धनी व्यक्ति है। यीशु जक्कई के साथ घूम रहे हैं, जक्कई के साथ घूमने के लिए दुख उठा रहे हैं, और मैं चाहता हूँ आप सुनें कि क्या होता है।

इसे देखें, लूका 19:8, *"जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, 'हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।'"* क्या आप इसी समय कह सकते हैं, "मैं अपनी संपत्ति का आधा दे देता हूँ। अपनी सारी संपत्ति का आधा मैं दे देता हूँ, और यदि किसी के साथ अन्याय किया है तो उसका चौगुना फेर देता हूँ।"

जक्कई कहता है और सुनें यीशु क्या जवाब देते हैं। "तब यीशु ने उससे कहा, 'आज इस घर में उद्धार आया है।'" (लूका 19:9). क्या अपनी संपत्ति देने के कारण उसे उद्धार मिला, बिल्कुल नहीं। उस समय उसके द्वारा अपनी संपत्ति को देना स्पष्ट प्रमाण था कि उसके हृदय में कुछ हुआ है जिस से सब कुछ पूरी तरह बदल गया है। यह प्रमाण था।

यही तस्वीर, मेरे साथ मत्ती 25 पर चलें। इससे न चूकें। मत्ती 25, हम पद 31 से शुरू करेंगे। मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ। इसकी कल्पना करें। यह लूका 16 की कोई अकेली घटना नहीं है। यीशु अपने लोगों से, धार्मिक लोगों से बात कर रहे हैं।
सुनें वह क्या कहते हैं, मत्ती 25:31, और इस तस्वीर को देखें। *"जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा।"* (मत्ती 25:32–33). भेड़ें दाईं तरफ और बकरियाँ बाईं तरफ। और इसका निर्धारण इस प्रकार होगा कि आप किस तरफ हैं,

> *तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े पहनाए; मैं बीमार था, और तुमने*

मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, और तुम मुझसे मिलने आए। तब धर्मी उसको उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा और पानी पिलाया? हमने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया? या नंगा देखा और कपड़े पहनाए? हमने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझसे मिलने आए?' तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।' तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए; मैं बीमार और बन्दीगृह में था, और तुमने मेरी सुधि न ली।' तब वे उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हमने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की?' तब वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।' और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 25:34–46).

अभी हमारे पास इस पूरे परिच्छेद का अध्ययन करने का समय नहीं है। यीशु सामान्य रूप से नहीं बल्कि विशेष रूप से उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो कंगाल हैं या भूखे हैं या बीमार हैं या बन्दीगृह में हैं। वह अपने चेलों के बारे में बात कर रहे हैं।

पूरे नये नियम में यह तस्वीर स्पष्ट है कि हम धर्मी और अधर्मी से प्रेम करते हैं। इससे न चूकें। यीशु कह रहे हैं कि यदि तुम कंगाल और भूखों को नहीं देते हो, चाहो वे मसीही हों या नहीं, तो तुम अनन्त दण्ड में जाओगे। क्यों, क्या इसलिए कि तुमने पर्याप्त अर्जित नहीं किया? नहीं। क्योंकि यह इसका स्पष्ट प्रमाण है कि मसीह आपके अन्दर नहीं है। यह इसका स्पष्ट प्रमाण है कि आपने उद्धार नहीं पाया है।

यही बात मुझे भयभीत करती है। इसी कारण हम इन बातों से जूझते आ रहे हैं, एक प्रकार से विश्वास और विचार का संकट, क्योंकि ये आधारभूत बातें हैं। लूका 19 में यह जक्कई परिपक्व मसीही नहीं है जो अपनी संपत्ति को दे रहा है। यह पहला काम है जिसे वह करता है, क्योंकि यह अर्थपूर्ण है। यह स्पष्ट है। यह उसके उद्धार का स्पष्ट प्रमाण है कि उसने ऐसा किया।

मत्ती 25 में यही तस्वरी है। जो निर्धनों और भूखों को नहीं देते हैं वे स्पष्टतः मसीह के चेले नहीं हैं, और स्पष्टतः वे अनन्त आग में जायेंगे। और फिर भी हम ऐसे समुदाय में रहते हैं, और ऐसे समुदाय का हिस्सा हैं जो इन बातों को अनदेखा करता है। हम इन बातों को अनदेखा करते हैं। ये हमारे लिए आधारभूत नहीं हैं। हम भोग–विलास में जीते हैं और अनसुना कर देते हैं।

हम कंगालों को बचा–खुचा देते हैं और यीशु कहते हैं, "तुम मेरे लोग नहीं हो। इकट्ठे होकर चाहे तुम जो कुछ कहो, यदि तुम इस प्रकार जीवन बिताते हो तो तुम मेरे लोग नहीं हो। मेरे लोग इस तरह नहीं जीते हैं। ऐसे लोग हैं जो मुझ पर विश्वास करते हैं और मैं उनके दिल में रहता हूँ, और उनका जीवन ऐसा नहीं है।"

अपने दिल में यीशु के होने का दावा करना और भोग–विलास में जीना तथा कंगालों की उपेक्षा करना, इनका कोई संबंध नहीं है। आप कहेंगे, "डेविड, मुझे केवल अनुग्रह के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहराया गया है।" और मेरा कहना है, हाँ बिल्कुल, तुम केवल अनुगह के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहराए गए हो, परन्तु यह विश्वास ही है जो दिलों को बदल देता है, इच्छाओं का बदल देता है, जहाँ फिर लालसाएँ वस्तुओं या स्वार्थी सुखों की नहीं होती हैं। इच्छाएँ फिर मसीह के लिए और खोए हुओं तथा कंगालों के लिए होती हैं। यह एक पूर्णतः अलग बदलाव है, और अपने जीवन जीने के तरीके के द्वारा आप बता सकते हैं कि आपका विश्वास वास्तविक है या नहीं।

याकूब 2:14–17, *"हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो इससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? यदि कोई भाई या बहन नंगे–उघाड़े हों और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उनसे कहे, 'कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो,'"* हमने तीसरी दुनिया के अपने भाइयों और बहनों से यही कहा है, और अपने देश में हम सुख से जीते रहे हैं। *"विश्वास यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।"* (याकूब 2:17). यह मरा हुआ है।

1 यूहन्ना 3:17, वह कहता है, "पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। यदि तुम इस तरह जीते हो तो परमेश्वर से प्रेम रखने का दावा नहीं कर सकते। वास्तविकता यह है कि तुम लोगों को कंगालों को देते हुए

देखकर बता सकते हो कि उनके अन्दर मसीह है या नहीं, और हमारे समुदाय में इसका प्रमाण अच्छा नहीं है। यह भयभीत करने वाला है।

और हमारे पास यह चुनाव है। हम खोखले धर्म में बने रह सकते हैं जो कंगालों की उपेक्षा करता है। दूसरा विकल्प है सच्चे पश्चाताप के साथ कंगालों की देखभाल करना। इस परिच्छेद में इस समय पर धनवान व्यक्ति अपने भाइयों के बारे में बात करता है। उसके पाँच भाई हैं। इससे न चूकें। नरक चिल्ला रहा है कि हम इस पद को सुनें।

नरक में पड़े ये लोग हमसे चिल्लाकर कह रहे हैं कि हम इन वचनों को सुनें। इन शब्दों की उपेक्षा न करें। इन शब्दों से न चूकें। और यह धनी व्यक्ति कहता है, "कुछ आश्चर्यजनक, कुछ असाधारण भेज कि वे समझ लें। वे वहाँ हैं और उन्होंने समझा नहीं है। मेरे भाइयों ने इसे समझा नहीं है।" उसने कहा, "मृतकों में से किसी को भेज। कुछ आश्चर्यजनक कर।" और अब्राहम कहता है, "उनके सामने वचन की सामर्थ है और इसी तरह वे जानेंगे, यदि वे इस वचन को सुनते हैं।"

यीशु कहते हैं, "तुम मन फिराव में प्रत्युत्तर कैसे देते हो?" यदि वे इन बातों को करते हैंः पहली बात, वचन को नम्रता से सुनें। वह कहते हैं, "उनके हृदय कठोर हैं..." और मैं अपने जीवन में इसी वास्तविकता को देखता हूँ, हमारे भौतिकतावाद से निपटने का सबसे मुश्किल भाग यह है कि हम इसके प्रति अत्यधिक अन्ध हो चुके हैं। हम नहीं जानते कि भौतिकतावादी न होने का क्या अर्थ है, और यह हमें कठोरता की ओर ले जाता है, और इस प्रकार के पदों को, ऐसे वचनों को सुनकर हम कहते हैं, "यह मेरे लिए नहीं है।"

जब मैं पढ़ता हूँ। और यह? यह मैं नहीं हूँ। यह दूसरे लोगों के बारे में है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। और यीशु कहते हैं, "तुम मनुष्यों की नजरों में अपने आप को धर्मी ठहराते हो। तुम अपने चारों ओर की संस्कृति को देखकर अपने आप को धर्मी ठहराते हुए सोचते हो, "मुझे निश्चय है कि यह ठीक है।" परन्तु परमेश्वर जानता है। परमेश्वर आपके दिलों को जानता है और वह जानता है वास्तव में क्या चल रहा है, आपसे और मुझ से भी बेहतर जानता है।

जो मनुष्यों सम्मुख ऊँचा समझा जाता है वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है। संसार के मार्ग परमेश्वर की दृष्टि में घृणित हैं। वचन की बुद्धि, इसे नम्रता से सुनो। इस वचन को सुनकर अपने आपको धर्मी मत ठहराओ।

वचन को नम्रता से सुनें और वचन को शीघ्रता से मानें। हम इसके बारे में और अधिक बात करेंगे, परन्तु हमें कार्य करना है। केवल भावना पर्याप्त नहीं है। यह पश्चाताप है। यह एक बदलाव है। हमें बदलना है। भाइयो और बहनो, यदि यह सत्य है तो हमें अपने बजट बनाने, जीन, और खर्च करने के तरीके को बदलना होगा। यदि यह सत्य नहीं है, तो हम आगे बढ़ सकते हैं। हम सदा की तरह चलते रहेंगे। परन्तु यदि यह सत्य है और यदि यह वचन हमारे जीवन को निर्धारित करता है और कलीसिया को निर्धारित करता है, तो हमें इन चेतावनियों को सुनना होगा, न केवल खोए हुओं और कंगालों की खातिर, बल्कि अपने स्वयं के लिए और अपनी आत्माओं की खातिर भी। यहाँ पर यही तस्वीर है।

भाइयो और बहनो, आज तीस बच्चों की मौत इस कारण हो जाएगी क्योंकि उनके पास भोजन हीं है या चिकित्सा सुविधा नहीं है, और संसार भर में लाखों मसीही भाई–बहन हैं जिनके पास खाने के लिए भोजन नहीं है, शरीर विकृत है और इसके परिणामस्वरूप मस्तिष्क भी विकृत हो चुका है। शीघ्रता से वचन का पालन करें।

अन्तिम बात...

कलीसिया, हम कहाँ खड़े होंगे? सवाल यही है। हम कहाँ खड़े होंगे? कंगालों और भूख से मरने वालों के साथ, या अत्यधिक खाने वालों के साथ? क्या हम स्वर्ग जाने वाले निर्धन के साथ खड़े होंगे या नरक की ओर जा रहे धनवान के साथ? क्या हम धन एकत्रित करते रहेंगे या हम अपने आप को दे देंगे, खोए हुओं और कंगालों की खातिर अपने खजानों को त्याग देंगे? हम कहाँ खड़े होंगे? यहाँ पर जब इतने सारे लोग आत्मिक और भौतिक घटी में हैं तो हम यहाँ खड़े होकर अपने आप को परमेश्वर के लोग कैसे कह सकते हैं?

अब मैं अत्यधिक सावधान रहना चाहता हूँ। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दू है, इस पद के प्रकाश में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दू। कृपया इससे न चूकें। हम ग्लानि के कारण कंगालों की देखभाल के प्रेरित नहीं होते हैं।

लोग कहेंगे, "क्या तुम्हारा यह कार्य या तुम्हारे जीवन का यह बदलाव इस कारण है कि तुम्हें अपराध बोध हो रहा है?" नहीं। हम ग्लानि के कारण कंगालों की देखभाल के लिए प्रेरित नहीं होते हैं। मेरे साथ बने रहें। हम सुसमाचार के द्वारा कंगालों की देखभाल के लिए प्रेरित किए जाते हैं।

यह 2 कुरिन्थियों 8:9 है, "तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।" यह सुसमाचार की तस्वीर है। हमें पुराने नियम की चेतावनियों को देखने की आवश्यकता है। हमें मत्ती 25 और लूका 16 की चेतावनियों को देखने की आवश्यकता है। हमें इन बातों के बारे में यीशु को दृढ़ता से कहते हुए सुनने की आवश्यकता है।

परन्तु इससे न चूकें। कृपया इससे न चूकें। हम यह सोचते हुए चले जाते हैं, "यह ग्लानि उत्पन्न करने वाला था। मैं इससे बाहर कैसे निकलूँ?" आप बिन्दू से चूक गए हैं। पवित्रशास्त्र यह नहीं सिखा रहा है। मेरी प्रार्थना है कि ऐसा प्रत्येक विचार आपसे दूर रहे। बिन्दू यह नहीं है।
बिन्दू यह है कि हम इन बातों की गम्भीरता को देखें, और फिर हमें मसीह की आज्ञा मानने का अहसास हो, अपने अपराध बोध के कारण नहीं, बल्कि इस कारण कि हमने उद्धार पा लिया है। हम मसीह की आज्ञा इसलिए मानते हैं क्योंकि हम नई सृष्टि हैं और हमने छुटकारा पाया है, और हमें सुखविलास में जीने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम दूसरे एक संसार के लिए जी रहे हैं। और इस लिए हम खुशी से, खुशी से अपना जीवन, अपनी संपत्ति, और अपना सब कुछ खोए हुओं और कंगालों में निवेश कर देते हैं, और हम इस संसार के अपने खजानों को त्याग देते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि एक दिन आ रहा है जब यह संसार उलट जाएगा, और सुसमाचार हमें इसकी गारण्टी देता है। इसी कारण हम इन वचनों को मानते हैं।

इसलिए परमेश्वर के लोगो, मेरा आपसे अनुरोध है, परमेश्वर के लोगो हम पश्चाताप करें। हमें पश्चाताप करना है। यदि यह बाइबल का परमेश्वर है और उसका यह कहना है, तो हम खतरे में हैं और हमें मन फिराने की आवश्यकता है।
मैं चाहता हूँ कि हम प्रार्थना करें। मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि आप खोखले धर्म से, सुखविलासों में जीने से, और कंगालों की उपेक्षा करने से मन फिराएँ। मेरा अनुरोध है कि आप यह न सोचें कि आज इस समय के बाद हम कैसे सुख से जीयेंगे। हमें अपने आप को इस वचन के दर्पण में देखना है और परमेश्वर के सम्मुख गिरकर कहना है, "परमेश्वर, हम चाहते हैं कि आप मसीह के जीवन को इस प्रकार हमारे अन्दर लाएँ, या हमें जरूरत है कि आप पहली बार मसीह को हमारे हृदय में प्रदान करें क्योंकि यह हमारे लिए अभी तक एक वास्तविकता नहीं है। यह केवल खेल है और हम अब खेल नहीं खेलना चाहते, आप हमें अपना अनुग्रह दें कि मैं अपने सुख–विलास के जीवन को दूर कर सकूँ, अपने धन को, अपने

जीवन को, अपने समय को, अपनी संपत्ति को, अपनी प्राथमिकताओं को कंगालों की खातिर वेदी पर रख सकूँ।"

पिता, हमारी प्रार्थना है कि हमारे प्रत्युत्तर से आप सम्मानित हों, हम आपको खोखला धर्म नहीं देना चाहते हैं। हम इस तरह आपके आँगनों को कुचलना नहीं चाहते हैं। इस समय हम आपके अनुग्रह के लिए प्रार्थना करते हैं कि हम नम्रता और आज्ञापालन के साथ वह कर सकें जो आपका वचन हमसे कहता है। परमेश्वर हमारी सहायता करें कि हम आपकी, बाइबल के परमेश्वर की, कंगालों और निस्सहायों के परमेश्वर की उपेक्षा न करें और आपको देखें और सुसमाचार में आपके द्वारा उपलब्ध अनुग्रह से प्रत्युत्तर दें।